

কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ড এর ৫০তম সভার কার্যবিবরণী

কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ডের ৫০তম সভা গত ১৬/৫/২০০৫ খ্রি. তারিখ সকাল ১০.০০ ঘটিকায় ডঃ এম নূরুল আলম, নির্বাহী চেয়ারম্যান, বিএআরসি ও চেয়ারম্যান, কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ডের সভাপতিত্বে বিএআরসির সম্মেলন কক্ষে অনুষ্ঠিত হয়। সভায় উপস্থিত সদস্য, কর্মকর্তা ও বিভিন্ন প্রতিষ্ঠানের প্রতিনিধিগণের তালিকা পরিশিষ্ট “ক” এ দেয়া হলো।

সভাপতি মহোদয় উপস্থিত সকলকে স্বাগত জানিয়ে সভার কাজ শুরু করেন এবং বিবিধ আলোচনায় আলোচ্য বিষয় অর্ন্তভুক্তির জন্য আহ্বান জানান। এ প্রেক্ষিতে ডঃ আব্দুস সালাম, মুখ্য বৈজ্ঞানিক কর্মকর্তা ও বিভাগীয় প্রধান, ব্রি, গাজীপুর বলেন যে, বিভিন্ন এনজিও এবং প্রাইভেট সেক্টর কর্তৃক বরেন্দ্র এলাকায় ধানের জাত নিয়ে গবেষণা করার কর্মসূচী গ্রহণ করেছে। ইহা যুক্তিসংগত কিনা এ ব্যাপারে তিনি অদ্যকার সভায় বিবিধ আলোচ্য বিষয়তে অর্ন্তভুক্তির আহ্বান জানালে সভাপতি মহোদয় এ বিষয়ে একটি পূর্ণাঙ্গ কার্যপত্র প্রণয়ন পূর্বক আগামী সভায় উত্থাপন করতে বলেন। অতঃপর কার্যপত্রে নির্ধারিত আলোচ্য বিষয় অনুসারে বিষয়গুলো উপস্থাপনের জন্য কমিটির সদস্য সচিব ও পরিচালক, বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সী, গাজীপুরকে অনুরোধ করেন। জনাব মোঃ হামিদুর রহমান, পরিচালক, বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সী, গাজীপুর আলোচ্য সূচী অনুযায়ী আলোচনার সূত্রপাত করেন।

আলোচ্য বিষয়-১ : কারিগরি কমিটির ৪৯তম বিশেষ সভার কার্যবিবরণী অনুমোদন।

সদস্য সচিব জানান যে, কারিগরি কমিটির ৪৯তম বিশেষ সভার কার্যবিবরণীটি বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সীর গত ১৬-১০-২০০৪ ইং তারিখের ১৫৮৮ (১৬) সংখ্যক স্মারকের মাধ্যমে কমিটির সকল সদস্যের নিকট বিতরণ করা হয়। এ ব্যাপারে কোন সদস্যের নিকট থেকে কোন মন্তব্য বা মতামত পাওয়া যায়নি। অদ্যকার সভায় পুণরায় মতামতের ভিত্তিতে বিগত সভার কার্যবিবরণীটি পরিসমর্থনের সিদ্ধান্ত নেয়া যেতে পারে।

সিদ্ধান্ত : কারিগরি কমিটির ৪৯তম বিশেষ সভার কার্যবিবরণীটি সর্বসম্মতিক্রমে পরিসমর্থিত হলো।

আলোচ্য বিষয়-২ : কারিগরি কমিটির ৪৮তম ও ৪৯তম বিশেষ সভার সিদ্ধান্তসমূহ বাস্তবায়নের অগ্রগতি পর্যালোচনা।

কারিগরি কমিটির ৪৮তম ও ৪৯তম বিশেষ সভার সিদ্ধান্তসমূহ বাস্তবায়নসহ জাতীয় বীজ বোর্ডের ৫৬তম সভায় অনুমোদনের অগ্রগতি পর্যালোচনা করা হয়। সদস্যগণ উক্ত সিদ্ধান্তসমূহ বাস্তবায়নের অগ্রগতি অবহিত হন এবং সন্তোষ প্রকাশ করেন।

আলোচ্য বিষয়-৩ : গম গবেষণা কেন্দ্র কর্তৃক উদ্ভাবিত (ক) বিএডব্লিউ-৯৬৬ (খ) বিএডব্লিউ-১০০৬ ও (গ) বিএডব্লিউ-১০০৮ কৌলিক সারি তিনটি যথাক্রমে বারি গম-২২ (সূফী), বারি গম-২৩ (বিজয়) ও বারি গম-২৪ (প্রদীপ) হিসেবে ছাড়করণ প্রসঙ্গে।

গম গবেষণা কেন্দ্র কর্তৃক উদ্ভাবিত বারি গম-২২ (সূফী) জাতটি ১৯৯৮ সালে দুটি কৌলিক সারি COQ/F61.70//CNDR/3/OLN/4/PHOS ও MIRNG/ALDAN// CNO এর মধ্যে সংকরায়ণ ঘটানো হয়। পরের বছর প্রাণ্ড এফ-১ এর সাথে কাঞ্চন জাতের টপ ক্রস করা হয়। অতঃপর এফ-২ বীজ হতে বিভিন্ন প্রজন্মে বাছাই করার পর বিএডব্লিউ-৯৬৬ নামে কৌলিক সারিটি নির্বাচন করা হয়।

প্রস্তাবিত বারি গম-২৩ (বিজয়) এর কৌলিক সারিটি নেপালে সংকরায়ণকৃত আঞ্চলিক নার্সারীর মাধ্যমে ১৯৯৭ সালে এদেশে পরীক্ষার জন্য নিয়ে আসা হয়। এ কৌলিক সারিটি বিভিন্ন নার্সারীতে ফলন পরীক্ষায় উচ্চফলনশীল প্রমাণিত হওয়ায় বিএডব্লিউ-১০০৬ নামে নির্বাচন করা হয়।

বারি কর্তৃক উদ্ভাবিত প্রস্তাবিত বারি গম-২৪ (প্রদীপ) একটি উচ্চ ফলনশীল গমের জাত। নেপালে বিগত ১৯৯১ সালে G162 এবং BL 1316 লাইন দুইটির মধ্যে শংকরায়নের পর ১৯৯২ সালে F1 এর সহিত NL.297 কে male parent হিসেবে top cross করা হয়। পরবর্তীতে F3 এবং F4 জেনারেশন modified bulk পদ্ধতির মাধ্যমে কৌলিক সারিটি বাছাই করা হয়। নেপালে শংকরায়ণকৃত এ কৌলিক সারিটি আঞ্চলিক নার্সারী (EGPSN) মাধ্যমে ১৯৯৮ সালে এদেশে পরীক্ষার জন্য নিয়ে আসা হয়। এ কৌলিক সারিটি বিভিন্ন নার্সারীতে এবং ফলন পরীক্ষায় উচ্চ ফলনশীল প্রমাণিত হওয়ায় বিএডব্লিউ-১০০৮ নামে নির্বাচন করা হয়।

ক) বি এ ডব্লিউ-৯৬৬ প্রস্তাবিত বারি গম-২২ (সূফী) : চার-পাঁচটি কুশি বিশিষ্ট, উচ্চতা ৯০-১০২ সেঃমিঃ। পাতা চওড়া ও গাঢ় সবুজ। শীষ বের হতে ৫৮-৬২ দিন এবং বোনা থেকে পাকা পর্যন্ত ১০০-১১০ দিন সময় লাগে। শীষ লম্বা এবং প্রতি শীষে দানার সংখ্যা ৫০-৫৫টি। দানার রং সাদা, চকচকে ও আকার ছোট। জাতটি পাতার দাগ রোগ সহনশীল এবং মরিচা রোগ প্রতিরোধী। উপযুক্ত পরিবেশে হেক্টর প্রতি ফলন ৩৬০০-৪৮০০ কেজি এবং দেবীতে বপনে জাতটি কাঞ্চনের চেয়ে শতকরা ১০-২০ ভাগ ফলন বেশী হয়। গাছের রং গাঢ় সবুজ।

জাতীয় বীজ বোর্ডের কারিগরি কমিটির কার্যাবলীর প্রতিবেদন, দ্বিতীয় সংখ্যা

উপরের कांडेर गिटे मावारी संख्यक लोम थाके। निशान पाता चण्डा ओ हेलानो निशान पातार खोले ओ कांडे मावारी थेके बेशी मोमेर मत आवरण थाके या शीषे कम थाके। स्पाइकलेटे निचेर गुमेर घाड़ खंज काटा, ठौट मावारी (प्राय ५-७ मिः मिः) एवं ठौटे सामान्य किछु काटा थाके। दाना सादा ओ आकारे मावारी थेके छोट (हजार दानार ओजन ३७-४२ ग्राम)। ए जातटि वपनेर उपयुक्त समय नडेम्बर मासेर १५ थेके ३० पर्यंत (अग्रहायण मासेर १म थेके २य सण्हा पर्यंत गम वपनेर उपयुक्त समय)। तबे जातटि ताप सहनशील त्हाई डिसेम्बर मासेर १५-२० तारिख पर्यंत वुनलेओ अन्यान्य जातेर तुलनाय भाल फलन देय। आटाय शक्तिशाली गुटेन ओ अन्यान्य प्रयोजनीय उपादान थाकाय जातटि पाडरुकि तैरीर जन्य खुवई उपयोगी। बांग्लादेशे छाड़कृत कोन जातेर मध्ये पाडरुकि तैरीर गुणागुण देखा याय ना।

जातटि २००२-२००३ मौसुमे देशेर ७टि अण्णलेर (ढाका, मयमनसिंह, यशोर, रंगपुर, राजशाही ओ कुमिल्ला) १०टि स्थाने ट्रायल हय। तन्मध्ये ४टि स्थाने मूल्यायन दल छाड़करणेर जन्य सुपारिश करेछे ४टिठे करे नाई एवं दुईटि स्थाने पुनः ट्रायल चेयेछे।

ख) वि ए डरिड-१००७ प्रस्तावित वारि गम-२३ (विजय)ः चार-पाँचटि कुशि विशिष्ट, गाछेर उच्चता ९५-१०५ सेःमिः। पाता चण्डा ओ हालका सबुज। शीष बेर हते ७०-७५ दिन एवं वाना थेके पाका पर्यंत १०३-११२ दिन समय लागे। शीष लम्बा एवं प्रति शीषे दानार संख्या ३५-४०टि दानार रंग सादा चकचके ओ आकार छोट। जातटि पातार दाग रोग सहनशील एवं मरिचा रोग प्रतिरोधी। उपयुक्त परिवेशे हेक्टर प्रति फलन ४३००-५००० केजि एवं देरीते वपने जातटि भाल फलन दिते सक्कम। गाछेर रंग गाटु सबुज। उपरेर कांडेर गिटे अण्ण संख्यक लोम थाके। निशान पाता चण्डा ओ हेलानो। शीषे बेशी ममेर मत आवरण थाके या कांडे ओ निशान पातार खोले कम थाके। स्पाइकलेटे निचेर गुमेर घाड़ चण्डा, ठौट खुवई छोट (प्राय १ मिःमिः) एवं ठौटे अनेक काटा थाके। दाना सादा ओ आकारे बड़। ए जातटि वपनेर उपयुक्त समय नडेम्बर मासेर १५ थेके ३० पर्यंत (अग्रहायण मासेर १म थेके २य सण्हा पर्यंत गम वपनेर उपयुक्त समय)। तबे जातटि ताप सहनशील त्हाई डिसेम्बर मासेर १५-२० तारिख पर्यंत वुनलेओ अन्यान्य जातेर तुलनाय भाल फलन देय। आमन धान काटार पर देरीते वपनेर जन्यओ जातटि उपयोगी।

जातटि २००२-२००३ मौसुमे देशेर ७टि अण्णलेर (ढाका, मयमनसिंह, यशोर, रंगपुर, राजशाही ओ कुमिल्ला) १०टि स्थाने ट्रायल हय। १०टि स्थानेर मध्ये ४टि स्थाने माठ मूल्यायन दल कर्तुक जातटिके छाड़करणेर जन्य सुपारिश करा हयेछे। ४टि स्थाने छाड़करणेर सुपारिश करे नाई एवं दुईटि स्थाने पुनः ट्रायलर सुपारिश करा हयेछे।

ग) वि ए डरिड-१००८ प्रस्तावित वारि गम-२४ (प्रदीप) : विभिन्न गवेषणा केन्द्रे ओ माठ पर्याये फलन परीक्षायओ ए जातटि भाल बले प्रमानित हय। जातटि ताप सहनशील, दाना आकारे बेश बड़ ओ सादा। आमन धान काटार पर देरीते वपनेर जन्य ए जातटि खुवई उपयोगी। गम गवेषणा केन्द्र प्रदुत तथे देखा याय ये, परीक्षकालीन समये प्रस्तावित वारि गम-२४ (प्रदीप) जातटि चार-पाँचटि कुशि विशिष्ट, गाछेर उच्चता ९५-१०० सेंटिमिटर। पाता चण्डा ओ गाटु सुबज। शीष बेर हते ७४-७७ दिन एवं वाना थेके पाका पर्यंत १०२-११० दिन समय लागे। शीष लम्बा एवं प्रति शीषे दानार संख्या ४५-५५टि। दानार रंग सादा चकचके ओ आकारे बेश बड़। पातार दाग रोग सहनशील एवं मरिचा रोग प्रतिरोधी। उपयुक्त परिवेशे हेक्टर प्रति फलन ३५००-५१०० केजि एवं देरीते वपने जातटि काण्णनेर चेये शतकरा १०-२० भाग फलन बेशी हय। उपरेर कांडेर गिटे मावारी संख्यक चुल/लोम थाके। चारा अवस्थाय कुशिगुला हालकाभावे हेलानो थाके। शीषे, कांडे ओ निशान पातार खोले मोमेर मत आवरण खुब कम थाके। स्पाइकलेटे निचेर गुमेर घाड़ चण्डा ओ खंज काटा, ठौट बेश लम्बा (प्राय १५-२० मिलिमिटर) एवं ठौटे अनेक काटा थाके। ए जातटि वपनेर उपयुक्त समय नडेम्बर मासेर १५ थेके ३० पर्यंत (अग्रहायण मासेर १म थेके २य सण्हा पर्यंत गम वपनेर उपयुक्त समय)। तबे जातटि ताप सहनशील त्हाई डिसेम्बर मासेर १५-२० तारिख पर्यंत वुनलेओ अन्यान्य जातेर तुलनाय भाल फलन देय।

२००३-२००४ मौसुमे देशेर ७टि अण्णलेर (ढाका, मयमनसिंह, यशोर, रंगपुर, राजशाही ओ कुमिल्ला) ९टि स्थाने ट्रायल हय। ८टि स्थाने चक जात थेके बेशी फलन पाओयाय माठ मूल्यायन दल कर्तुक जातटिके जातकरणेर जन्य सुपारिश करा हयेछे। कुमिल्ला देवीद्वारे जातटि छाड़करणेर पक्के अथवा विपक्के कोन मतामत देय नाई।

बीज प्रतययन एजेन्सीर कन्ट्रोल फार्मे २००१-२००२ एवं २००२-२००३ मौसुमे प्रस्तावित जात तिनटि डिईडएसटेस्ट (DUS Test) सम्पन्न करे जातेर वर्णना (Varietal descriptors) तैरी करा हयेछे एवं स्वतन्त्र वैशिष्ट (Distinct characters) चिह्नित करा हयेछे।

উল্লেখ্য যে, বিএডব্লিউ-৯৬৬ এবং বিএডব্লিউ-১০০৬ কৌলিক সারি দুটি কারিগরি কমিটির ৪৭তম সভায় ছাড়করণের নিমিত্তে উত্থাপন করা হলে এই মর্মে সিদ্ধান্ত গৃহীত হয় যে, “গমের প্রস্তাবিত জাত দুটির মাঠ মূল্যায়ন দলের সুস্পষ্ট মতামতসহ অর্থাৎ ছাড়করণের সুপারিশের কারণসমূহ বা সুপারিশ না করার কারণসমূহ উল্লেখসহ সুস্পষ্ট মতামত কারিগরি কমিটির পরবর্তী সভায় উপস্থাপন করতে হবে। একই সাথে এ বছরের গবেষণার ফলাফলও সন্নিবেশিত করতে হবে (দায়িত্ব : এসসিও ও গম গবেষণা কেন্দ্র)”।

গৃহীত সিদ্ধান্ত মোতাবেক জাত দুটির আঞ্চলিক মূল্যায়ন দলের সুস্পষ্ট মতামত এবং সেই সাথে ২০০২-২০০৩ বছরের গম গবেষণা কেন্দ্রের গবেষণার ফলাফলসহ অধ্যকার সভায় উপস্থাপন করা হয়।

ডঃ মোঃ আবু সুফিয়ান, সিএসও ও পরিচালক, গম গবেষণা কেন্দ্র, নসিপুর, দিনাজপুর প্রস্তাবিত কৌলিক সারি তিনটির চেক জাতের সাথে তুলনামূলক ফলাফল তথ্য সভায় উপস্থাপন করেন। উক্ত বিশ্লেষণমূলক তথ্য দেখা যায় তিনটি জাতেরই অধিকাংশ স্থানে চেক জাত থেকে ভাল ফলন পাওয়া গিয়েছে। উল্লেখ্য যে, বিএডব্লিউ-৯৬৬ এর আটায় শক্তিশালী গ্লোটেন ও অন্যান্য প্রয়োজনীয় উপাদান থাকায় পাউরুটি তৈরীর জন্য জাতটি খুবই উপযোগী। অপর দিকে বিএডব্লিউ-১০০৮ চাপাতি তৈরীর জন্য একটি উপযুক্ত জাত। তিনটি জাতই তাপ সহনশীল বিধায় আমন ধান কাটার পর দেরীতে বপনের জন্য (ডিসেম্বর মাসের ১৫ থেকে ২০ তারিখ পর্যন্ত) প্রস্তাবিত তিনটি জাতই উপযোগী বলে তিনি উল্লেখ করেন।

ডঃ আবদুর রাজ্জাক, সদস্য পরিচালক (শস্য), বিএআরসি বলেন যে, জাত তিনটির মধ্যে আবহাওয়া ভেদে কোন এলাকার জন্য কোনটি উপযুক্ত তাহা নির্ণয় হওয়া আবশ্যিক। সেই সাথে ১০০৮ জাতটির দানা বড় বিধায় সেচ ছাড়া ও সেচযুক্ত জমিতে হেক্টর প্রতি বীজের পরিমাণ কি হবে তা উল্লেখ থাকা প্রয়োজন। এ প্রেক্ষিতে জনাব সাইফুজ্জামান, উর্ধ্বতন বৈজ্ঞানিক কর্মকর্তা, বারি বলেন যে, বাংলাদেশে গমের আবাদকৃত প্রত্যেক স্থানেই প্রস্তাবিত তিনটি জাতই বপন করা যাবে। তবে কম স্থায়ীত্ব শীত এলাকায় বিএডব্লিউ-৯৬৬ অপেক্ষাকৃত ভাল ফলন দিবে। বিএডব্লিউ-১০০৮ জাতের গম বীজের আকার বড় হওয়া সত্ত্বেও সেচ ছাড়া ১০০ কেজি এবং সেচযুক্ত স্থানে ১২০ কেজি বীজের প্রয়োজন হবে। সভাপতি মহোদয় দেশের দক্ষিণাঞ্চলে লবণাক্ত সহিষ্ণু এলাকার উপযোগী গমের জাত উদ্ভাবনের বিষয়ে গম গবেষণার নিকট জানতে চান। এ প্রেক্ষিতে ডঃ এ বি সাখাওয়াত হোসেন Affiliate Scientis, CIMMYT বলেন যে, দুর্বল ও মধ্যম লবণাক্ত এলাকায় শতাব্দী ও সৌরভ জাতের সন্তোষজনক ফলন পাওয়া গিয়েছে। তিনি আরো বলেন লবণাক্ত সহিষ্ণু গমের জাত উদ্ভাবনের প্রচেষ্টা অব্যাহত রয়েছে। অতঃপর বিস্তারিত আলোচনা শেষে বিএডব্লিউ-৯৬৬ কৌলিক সারিটি পাউরুটি তৈরীর গুণাগুণ সমৃদ্ধ, তাপ সহনশীল, বিএডব্লিউ-১০০৬ ও বিএডব্লিউ-১০০৮ কৌলিক সারি দুটির *Bipolaris sorokiniana* রোগের প্রতিরোধক, আমন কাটার পরে দেরীতে বপনযোগ্য এবং চেক জাত থেকে অধিকাংশ স্থানেই ফলন বেশী পাওয়ায় জাত তিনটিকে ছাড়করণের পক্ষে মতামত দেন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো :

সিদ্ধান্ত : বাংলাদেশ কৃষি গবেষণা ইনস্টিটিউটের গম গবেষণা কেন্দ্র কর্তৃক উদ্ভাবিত বিএডব্লিউ-৯৬৬, বিএডব্লিউ-১০০৬ ও বিএডব্লিউ-১০০৮ কৌলিক সারি তিনটিকে যথাক্রমে বারি গম-২২ (সুফী), বারি গম-২৩ (বিজয়) ও বারি গম-২৪ (প্রদীপ) হিসাবে সারা দেশে চাষাবাদের নিমিত্তে ছাড়করণের জন্য জাতীয় বীজ বোর্ডে সুপারিশ করা হলো।

আলোচ্য বিষয়-৪ : হাইব্রিড আমন/২০০৩-২০০৪ এবং ২০০৪-২০০৫ মৌসুমের ট্রায়ালকৃত মূল্যায়ন ফলাফল পর্যালোচনা।

আমন/২০০৩-২০০৪ মৌসুমে নিম্নবর্ণিত হাইব্রিড ধান বীজ কোম্পানী কর্তৃক (১) আফতাব বহুমুখী ফার্ম লিঃ এর দুটি জাত (ক) এল পি-৫০ (খ) এল পি-৭০ এবং সুপ্রীম সীড কোম্পানীর একটি জাত (ক) হাইব্রিড ধান নং-৯৯-৫ (হীরা) মোট ৩টি হাইব্রিড ধানের সাথে বিআর-১১ Standard চেকজাত সহ সর্বমোট (৩+১) ৪টি ধানের জাত (যা এস সি এ প্রদত্ত কোড নম্বর এইচ-০৭৩ থেকে এইচ-০৭৬ পর্যন্ত) ব্যবহার করে দেশের ৬টি কৃষি অঞ্চলের (ঢাকা, ময়মনসিংহ, কুমিল্লা, যশোর, রাজশাহী ও রংপুর) অনস্টেশন ও অনফার্মে ট্রায়াল স্থাপন করা হয়।

উক্ত অঞ্চলসমূহের মাঠ মূল্যায়ন দলের মূল্যায়ন প্রতিবেদন চেক জাতের সাথে প্রস্তাবিত হাইব্রিড জাতের অন্যান্য বৈশিষ্ট্যসহ ফলনের তারতম্যের হার বিশ্লেষণপূর্বক কারিগরি কমিটির ৪৮তম সভায় উপস্থাপন করা হয়েছিল। উল্লেখ্য যে, ট্রায়ালকৃত হাইব্রিড ধানের এইচ-০৭৩ এবং এইচ-০৭৫ জাত দুটির কোনটিই Standard চেকজাত বিআর-১১ থেকে কোন স্থানেই ২০% এর অধিক ফলন পরিলক্ষিত হয়নি। উল্লেখ্য যে, এইচ-০৭৬ জাতটির বীজ অংকুরিত হয়নি বিধায় ট্রায়াল বাস্তবায়িত হয়নি।

এ প্রসঙ্গে জনাব মোঃ মাসুম, চেয়ারম্যান, সুপ্রীম সীড কোং উল্লেখ করেন যে, হাইব্রিডের জীবনকালের চেয়ে চেক জাতের জীবনকাল অনেক বেশী ছিল। তিনি আরো বলেন যে, দেশের চাষীরা আমন মৌসুমে স্বাভাবিকই কম জীবনকাল সম্পন্ন জাত চাষাবাদের প্রত্যাশী।

ডঃ এ আর গোমস্তা, পরিচালক (গবেষণা), ব্রি বলেন যে, হাইব্রিড জাতের সাথে দীর্ঘ ও স্বল্প জীবনকাল সম্পন্ন কমপক্ষে দুটি চেক জাত ব্যবহার করে হাইব্রিড এবং চেক জাতের দিন প্রতি প্রাপ্ত ফলন হিসেবে (Per day crop yield) বিবেচনায় আনা যেতে পারে। জনাব হাওলাদার বলেন যে, হাইব্রিড জাত নিবন্ধন পদ্ধতির সর্বশেষ সংশোধনের পূর্বেই গত আমন মৌসুমের ট্রায়াল বাস্তবায়িত হওয়ায় এক্ষেত্রে স্বল্প

জাতীয় বীজ বোর্ডের কারিগরি কমিটির কার্যাবলীর প্রতিবেদন, দ্বিতীয় সংখ্যা

জীবনকাল সম্পন্ন চেক জাত ব্যবহৃত হয়নি। তবে চলতি আমন/২০০৪-২০০৫ মৌসুমে হাইব্রিড ধান মূল্যায়ন ও নিবন্ধন পদ্ধতি অনুসরণপূর্বক স্বল্প জীবনকাল সম্পন্ন হাইব্রিড জাতের সাথে বি ধান-৩১ চেক জাত হিসেবে ব্যবহার করা হয়েছে।

এ প্রেক্ষিতে ডঃ লুৎফুর রহমান মত প্রকাশ করেন যে, Per day crop yield estimate এর ভিত্তিতে হাইব্রিড ধানের নিবন্ধন পদ্ধতি অনুসরণপূর্বক অনটন ও অনফার্মে উভয় ক্ষেত্রে কমপক্ষে ২০% ফলন প্রাপ্তির ভিত্তিতে নিবন্ধিত হওয়ার বিষয়টি বিবেচনা করা যেতে পারে। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হয়। “গত ২০০৩-২০০৪ আমন মৌসুমে ট্রায়ালকৃত এইচ-০৭৩ এবং এইচ-০৭৫ জাত দুটি চেকজাত (বিআর-১১) সহ Per day crop yield estimate পূর্বক বিশ্লেষিত ফলাফল আগামী কারিগরি কমিটির সভায় উপস্থাপন করবে”।

উক্ত সভার সিদ্ধান্ত মোতাবেক Per day crop yield Analysis সহ অধ্যকার সভায় উপস্থাপন করা হলো। সেই সাথে আমন/২০০৪-২০০৫ মৌসুমে (১) বাংলাদেশ ধান গবেষণা ইনস্টিটিউট এর একটি জাত (ক) বি হাইব্রিড ধান-২ (২) আফতাব বহুমুখী ফার্ম লিঃ এর দুটি জাত (ক) এল পি-৫০ (খ) এল পি-৭০ এবং (৩) সিনজেনটা বাংলাদেশ লিঃ এর একটি জাত (ক) এনকে-৩২-৬৮ চেক জাত বি ধান-৩১ এর সাথে কোড নম্বর এইচ-০৮৩ থেকে এইচ-০৮৭ পর্যন্ত ব্যবহার করে দেশের ৬টি কৃষি অঞ্চলের (ঢাকা, ময়মনসিংহ, কুমিল্লা, যশোর, রাজশাহী ও রংপুর) অনটন ও অনফার্মে ট্রায়াল স্থাপন করা হয়। কারিগরি কমিটির ৪৮তম সভার সিদ্ধান্ত মোতাবেক Per day crop yield Analysis সহ উক্ত ফলাফলও অধ্যকার সভায় উপস্থাপন করা হলে ডঃ আবদুর রাজ্জাক বলেন যে, কোন কোন অঞ্চলের যেমন হাওর অঞ্চলের জন্য বোরো মৌসুমে স্বল্প জীবনকাল জাতের প্রয়োজন থাকলেও সকল অঞ্চলের জন্য স্বল্প জীবনকাল জাতের প্রয়োজন নাও থাকতে পারে। এ প্রেক্ষিতে সভাপতি সুপ্রিয় সীড বলেন যে, হাইব্রিড এর ক্ষেত্রে Per day yield count অবশ্যই বিবেচনায় আনা প্রয়োজন। তিনি আরো বলেন স্বল্প জীবনকালের হাইব্রিড জাত বিবেচনায় আনলে আমন কাটার পর পরই আগাম রবি ফসল চাষাবাদ করে চাষী লাভবান হবে। এ প্রেক্ষিতে ডঃ এ ডব্লিউ জুলফিকার বলেন যে, চেক জাতের সাথে প্রত্যেক হাইব্রিড জাতের ফলন সমতা আনার জন্য Per day yield count করা আবশ্যিক। অতঃপর সভাপতি মহোদয় বলেন যে, সিদ্ধান্ত গ্রহণের ব্যাপারে Statistical Analysis ফলাফল আরো সংক্ষিপ্ত আকারে উপস্থাপন করা প্রয়োজন ছিল। আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হয়।

সিদ্ধান্ত : পরবর্তী কারিগরি কমিটির সভায় বিগত ২০০৩-২০০৪ ও ২০০৪-২০০৫ আমন মৌসুমের ট্রায়ালকৃত হাইব্রিড ধানের ফলাফল বি, পরিসংখ্যান বিভাগের সহায়তায় Statistical Analysis সহ সংক্ষিপ্ত আকারে উপস্থাপন করবে। (দায়িত্ব : বি ও এসসিএ)

আলোচ্য বিষয়-৫ : বি বি আর-৬১১০-১০-১-২ এবং বিআর-৫৮৭৭-২১-২-৩ কৌলিক সারি দুটি যথাক্রমে বি ধান-৪৪ আমন মৌসুমের এবং বি ধান-৪৫ বোরো মৌসুমের নুতন জাত হিসেবে ছাড়করণ প্রসংগে।

(ক) কৌলিক সারি নং-বিআর ৬১১০-১০-১-২ : বি প্রদত্ত তথ্য মতে ইহা বি ধান-৩০ ও ৩১ এর মধ্যে সংকরায়নের মাধ্যমে উদ্ভাবিত। পরীক্ষা নিরীক্ষান্তে ও দেশের বিভিন্ন অঞ্চলে বিশেষ করে দক্ষিণাঞ্চলে রোপা আমন মৌসুমের ফলন পরীক্ষায় সন্তোষজনক হওয়ায় বি ধান-৪৪ হিসেবে ছাড়করণের প্রস্তাব করেন। কৌলিক সারিটিতে উফশী ধানের সকল বৈশিষ্ট্য বিদ্যমান। উচ্চতা ১২৫-১৩০ সেগমিঃ। জীবনকাল ১৪০-১৪৫ দিন। ১০০০ টি পুষ্ট ধানের ওজন প্রায় ২৯৬ গ্রাম। চাল মাঝারী মোটা ও রং সাদা। জীবনকাল বি আর-১১ এর সমান। বিআর-১১ কেবল বৃষ্টি ও সেচ নির্ভর এলাকার জন্য উপযোগী। পক্ষান্তরে বি ধান-৪৪ স্বাভাবিক রোপা মৌসুমে বিআর-১১ এর ন্যায় চাষ করা ছাড়াও দেশের দক্ষিণাঞ্চলের জোয়ার ভাটার জলমগ্নতা সহিষ্ণু জাত হিসাবে পরীক্ষিত।

২০০১-২০০২ মৌসুমে দেশের ৪টি অঞ্চলের (বরিশাল, যশোর, রাজশাহী ও কুমিল্লা) ৮টি স্থানে ট্রায়াল হয়। ৫টি স্থানে সুপারিশ করা হয়েছে, ২টি স্থানে সুপারিশ করে নাই এবং ১টি স্থানে পুনঃ ট্রায়াল চেয়েছে।

(খ) কৌলিক সারি নং-বিআর ৫৮৭৭-২১-২-৩ : বি এর বর্ণনা মতে উক্ত কৌলিক সারিটি বিআর-২ এবং টেটেপ (TETEP) এর মধ্যে সংকরায়নের মাধ্যমে উদ্ভাবিত। কৌলিক সারিটি প্রজনন প্রক্রিয়ায় পরীক্ষা নিরীক্ষা ও দেশের বিভিন্ন অঞ্চলে বোরো মৌসুমের ফলন পরীক্ষায় সন্তোষজনক হওয়ায় চূড়ান্তভাবে নির্বাচন করা হয়। বি ধান-৪৫ এ আধুনিক উফশী ধানের সকল বৈশিষ্ট্য বিদ্যমান। গাছের উচ্চতা ৯৮ সেগমিঃ। জীবনকাল ১৪০-১৪৫ দিন। ১০০০টি পুষ্ট ধানের ওজন ২৬ গ্রাম। রং হালকা সোনালী (Straw color), চাল মাঝারী মোটা ও রং সাদা। শীষের উপরিভাগের ধানে ছোট সুংগ আছে।

জীবনকাল বি ধান-২৮ এর চেয়ে ৪-৫ দিন আগাম এবং গড়ে প্রায় ০.৫ টন ফলন বেশী হয়। কান্ড বেশ শক্ত এবং সহজে হেলে পড়ে না। জাতটি মোটামোটি ঠান্ডা প্রতিরোধ ক্ষমতা আছে। গাছের কান্ড বেশ শক্ত। সে কারণে বোরো মৌসুমের উফশী জাত বি ধান-২৮ এর মত সহজে হেলে পড়ে না ও ফলন বেশী হয়।

জাতটি ২০০১-২০০২ মৌসুমে দেশের ৪টি অঞ্চলের (বরিশাল, রংপুর, রাজশাহী ও কুমিল্লা) ৮টি স্থানে ট্রায়াল স্থাপন করা হয়। ৫টি স্থানে মাঠ মূল্যায়ন দল ছাড়করণের জন্য সুপারিশ করেছে, ২টি স্থানে ছাড়করণের সুপারিশ করে নাই এবং ১টি স্থানে পুনঃট্রায়াল চেয়েছে।

বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সীর কন্ট্রোল ফার্মে ২০০০-২০০১ এবং ২০০১-২০০২ আমন/বোরো মৌসুমে প্রস্তাবিত জাত দুটির ডিইউ টেস্ট (DUS Test) সম্পন্ন করে জাতের বর্ণনা (Varietal descriptors) তৈরী করা হয়েছে এবং জাত দুটির স্বতন্ত্র বৈশিষ্ট্য (Distinct characters) চিহ্নিত করা হয়েছে।

ব্রি কর্তৃক প্রস্তাবিত জাত দুটির ছাড়করণের বিষয় সভায় উপস্থাপন করা হলে ডঃ আবদুস সালাম, প্রধান বৈজ্ঞানিক কর্মকর্তা ও বিভাগীয় প্রধান, ব্রি বিআর ৬১১০-১০-১-২ ও বিআর ৫৮৭৭-২১-২-৩ কৌলিক সারি দুটির চেক জাত যথাক্রমে বিআর-১১ ও ব্রিধান-২৮ এর সাথে তুলনামূলক গুণাগুণ উপস্থাপন করেন। তিনি বলেন দেশের দক্ষিণাঞ্চলে আমন মৌসুমে তেমন কোন ভাল জাত নেই বিধায় বিআর-৬১১০-১০-১-২ স্থানীয় জাত থেকে ফলন অনেক বেশী এবং দানার আকার মোটা হওয়ায় উপকূলীয় এলাকার জনগণ ইতিমধ্যে জাতটি আবাদের জন্য আগ্রহ প্রকাশ করেছেন।

অপর দিকে বিআর-৫৮৭৭-২১-২-৩ বোরো মৌসুমে জন্য চেক জাত বিধান-২৮ থেকে প্রস্তাবিত জাতটি মোটামোটি ঠান্ডা প্রতিরোধ ক্ষমতা আছে, কান্ড শক্ত, সহজে হেলে পড়ে না এবং আনুপাতিক হারে ধান মোটা ও ফলন বেশী।

অতঃপর এ বিষয়ে ডঃ আবদুর রাজ্জাক সদস্য পরিচালক (শস্য) বলেন যে, বিআর-১১ এর পরে বহুদিন যাবত চাষীদের চাহিদা মাফিক রোপা আমনের কোন ভাল জাত পাওয়া যায়নি। তাই এ জাতটি ছাড়করণ করা হলে চাষীরা রোপা আমন মৌসুমে একটি প্রত্যাশিত জাত পাবে বলে তিনি আশা করেন। এ প্রেক্ষিতে সভাপতি মহোদয় কর্তৃক জাতটি মোটা ধান বিধায় চাষাবাদ এলাকায় আর্থ সামাজিক অবস্থার উপর কোন প্রভাব ফেলবে কি না জানতে চাওয়া হলে, ডঃ আবদুস সালাম বলেন যে, চেক জাত থেকে প্রায় ১ টন ফলন বেশী হওয়ায় চাষীরা উক্ত জাতটি চাষাবাদ করে লাভবান হবেন বলে তিনি জানান। অতঃপর সভাপতি মহোদয় বিআর-৬১১০-১০-১-২ কৌলিক সারিটি জলমগ্নতা সহিষ্ণু, চেক জাত ব্রি ধান-১১ থেকে অপেক্ষাকৃত ফলন বেশী পাওয়া এবং বিআর-৫৮৭৭-২১-২-৩ কৌলিক সারিটি ঠান্ডা ও রোগবাহাই প্রতিরোধক এবং চেক জাত ব্রি ধান-২৮ থেকে ফলন অপেক্ষাকৃত বেশী পাওয়ায় প্রস্তাবিত জাত দুটিকে ছাড়করণের পক্ষে মতামত দেন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহিত হলো :

সিদ্ধান্ত : বাংলাদেশ ধান গবেষণা ইনস্টিটিউট কর্তৃক উদ্ভবিত বিআর-৬১১০-১০-১-২ ও বিআর- ৫৮৭৭-২১-২-৩ কৌলিক সারি দুটি যথাক্রমে ব্রি ধান-৪৪ আমন মৌসুমে দক্ষিণাঞ্চলের জোয়ার ভাটা এলাকায় ও ব্রি ধান-৪৫ বোরো মৌসুমে আগাম জাত হিসাবে সারা দেশে চাষাবাদের নিমিত্তে ছাড়করণের জন্য জাতীয় বীজ বোর্ডে সুপারিশ করা হলো।

আলোচ্য বিষয়-৬ : বারি এর কন্দাল ফসল গবেষণা কেন্দ্রে যাচাইকৃত আলুর ৩টি (আল্ট্রা, ডুরা ও এসটারিভ) জাত যথাক্রমে বারি আলু-২৩ (আল্ট্রা), বারি আলু-২৪ (ডুরা) ও বারি আলু-২৫ (এসটারিভ) হিসাবে ছাড়করণ।

জাতগুলি এ দেশের আবহাওয়ায় উপযোগিতা যাচাইয়ের জন্য আমদানীকৃত। নতুন জাত প্রাপ্তির লক্ষ্যে বাংলাদেশ কৃষি গবেষণা ইনস্টিটিউটের কন্দাল ফসল গবেষণা কেন্দ্র প্রতি বছরই নিত্যনতুন বিদেশী আলুর জাত মূল্যায়ন করছে। ১৯৭১ সাল হতে এ পর্যন্ত ২৬টি বিদেশী জাত ও জার্মানাজম হতে উদ্ভাবিত ৪টি জাত জাতীয় বীজ বোর্ড কর্তৃক অনুমোদিত হয়েছে। বর্তমানে প্রক্রিয়াজাতকরণ ও বিদেশে রপ্তানী যোগ্য জাত বাছাইয়ের প্রচেষ্টা চলছে। এদের মধ্যে উপরোক্ত জাতগুলি প্রতিশ্রুতিশীল প্রমানিত হয়েছে।

(ক) বারি আলু-২৩ (আল্ট্রা) : গাছ মধ্যম উচ্চতা সম্পন্ন এবং গড়ে ৪-৫টি কান্ড থাকে। কান্ড শক্ত আংশিক হেলানো। পাতা ঘন ও হালকা সবুজ। ৯০-৯৫ দিনে পরিপক্বতা লাভ করে। ডিম্বাকৃতি লম্বাটে। রং হলুদাভ উজ্জ্বল সাদা। শাসের রং হলুদাভ সাদা। চোখ অগভীর। জাতটি ২০০৩-২০০৪ মৌসুমে ৪টি অঞ্চলের (ঢাকা, ময়মনসিংহ, রংপুর ও যশোর) ৬টি স্থানে ডায়মন্ট চেক জাতের সাথে ট্রায়াল স্থাপন করা হয়। মাঠ মূল্যায়ন দল কর্তৃক ৪টি স্থানে ছাড়করণের সুপারিশ করা হয়েছে, একটি স্থানে সুপারিশ করা হয়নি এবং যশোর অঞ্চলে সুষ্ঠু ব্যবস্থাপনা না হওয়ায় পুনঃ ট্রায়ালের সুপারিশ করেছে।

(খ) বারি আলু-২৪ (ডুরা) : গাছ মধ্যম উচ্চতা সম্পন্ন এবং গড়ে ৪-৫টি কান্ড থাকে। কান্ড শক্ত আংশিক হেলানো। পাতা ঘন ও হালকা সবুজ। ৯০-৯৫ দিনে পরিপক্বতা লাভ করে। ডিম্বাকৃতি থেকে লম্বা ডিম্বাকৃতি হয়। রং হলুদাভ উজ্জ্বল লাল। শাসের রং হলুদাভ সাদা। চোখ অগভীর।

উক্ত জাতটি ২০০৩-২০০৪ মৌসুমে দেশের ৪টি অঞ্চলের (ঢাকা, ময়মনসিংহ, রংপুর ও যশোর) ৬টি স্থানে ডায়মন্ট চেক জাতের সাথে ট্রায়াল স্থাপন করা হয়। ৫টি স্থানে মাঠ মূল্যায়ন দল ছাড়করণের জন্য সুপারিশ করেছে, যশোর অঞ্চলে সুষ্ঠু ব্যবস্থাপনা না হওয়ায় পুনঃ ট্রায়ালের সুপারিশ করেছে।

(গ) বারি আলু-২৫ (এসটারিক্স) : গাছ মধ্যম উচ্চতা সম্পন্ন এবং গড়ে ৪-৫টি কাণ্ড থাকে। কাণ্ড শক্ত আংশিক হেলানো। পাতা ঘন ও হালকা সুবজ। ৯০-৯৫ দিনে পরিপক্বতা হয়। টিউবার ডিম্বাকৃতি থেকে লম্বাকৃতি হয়। রং উজ্জ্বল লাল। শাসের রং ক্রীম হলুদ সাদা। চোখ অগভীর।

২০০৩-২০০৪ মৌসুমে দেশের ৪টি অঞ্চলের (বরিশাল, রংপুর, রাজশাহী ও কুমিল্লা) ৮টি স্থানে ডায়মন্ট চেক জাতের সাথে ট্রায়াল স্থাপন করা হয়। ৬টি স্থানে মাঠ মূল্যায়ন দল সুপারিশ করা হয়েছে, ২টি স্থানে করে নাই এবং ১টি স্থানে পুনঃট্রায়াল চেয়েছে।

বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সীর কন্ট্রোল ফার্মে ২০০১ এবং ২০০২ মৌসুমে প্রস্তাবিত জাত তিনটির ডিইউএস টেস্ট (DUS Test) সম্পন্ন করে জাতের বর্ণনা (Varietal descriptors) তৈরী করা হয়েছে এবং জাত তিনটির স্বতন্ত্র বৈশিষ্ট্য (Distinct characters) চিহ্নিত করা হয়েছে।

ডঃ হারুন অর রশিদ প্রধান বৈজ্ঞানিক কর্মকর্তা, কন্দাল গবেষণা কেন্দ্র, বারি প্রস্তাবিত জাত তিনটির তুলনামূলক গুণাগুণ সভায় উপস্থাপন করেন। তিনি উল্লেখ করেন যে, তিনটি জাতই চেক জাত থেকে ফলন ভাল। তিনি আরো বলেন, জাতগুলির ড্রাই মেটার ভাল এবং প্রক্রিয়াজাতকরণ উপযোগী।

জনাব জহিরুদ্দিন তালুকদার, জেনারেল ম্যানেজার (সীড), বিএডিসি বলেন যে, বর্তমানে প্রতিষ্ঠিত প্রক্রিয়াজাতকরণ মিলগুলি চালু রাখতে হলে বিদেশ থেকে আলু আমদানী করতে হবে। এমতাবস্থায় উক্ত জাতগুলি ছাড়করণ করা হলে প্রক্রিয়াজাতকরণ মিলগুলির জন্য সহায়ক হবে এবং আমাদের চাষীরাও লাভবান হবে। এ প্রেক্ষিতে জনাব মোঃ মাসুম, চেয়ারম্যান সুপ্রিম সীড কোম্পানী লিঃ ও একই মত প্রকাশ করেন।

জনাব আবদুর রাজ্জাক, সদস্য পরিচালক (শস্য) বলেন যে, বিদেশে রপ্তানীযোগ্য ও স্থানীয় মিলগুলিতে ব্যবহারের জন্য বেশী ড্রাই মেটার সমৃদ্ধ নতুন জাতের প্রয়োজন রয়েছে বিধায় তিনটি জাতকেই ছাড়করণ করা যেতে পারে। অতঃপর সভাপতি মহোদয় বলেন যে, দেশে বর্তমানে ডায়মন্ট ও কার্ডিনাল ব্যতীত অন্যান্য জাতগুলো চাষীদের মাঝে তেমন গ্রহণযোগ্যতা লাভ করেনি। তাছাড়া তিনটি জাতই চেক জাত থেকে ভাল ফলন, বিদেশে রপ্তানী ও দেশীয় শিল্পে ব্যবহার যোগ্য এবং রোগবালাই অপেক্ষাকৃত কম বিধায় জাত তিনটিকে নতুন জাত হিসাবে ছাড়করণের পক্ষে মতামত প্রদান করেন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো।

সিদ্ধান্ত : বাংলাদেশ কৃষি গবেষণা ইনস্টিটিউটের কন্দাল ফসল গবেষণা কেন্দ্র কর্তৃক যাচাইকৃত আলুর ৩টি (আলট্রা, ডুরা ও এসটারিক্স) জাতকে যথাক্রমে বারি আলু-২৩ (আলট্রা), বারি আলু-২৪ (ডুরা) ও বারি আলু-২৫ (এসটারিক্স)।

আলোচ্য বিষয়-৭ : বিবিধ।

(ক) কারিগরি কমিটির ৪৮তম সভায় হাইব্রিড ধানের অনুরূপ বিদেশ থেকে বীজ আলু আমদানীপূর্বক নিবন্ধিকরণের জন্য একটি সুপারিশমালা প্রণয়নের নিমিত্তে ডঃ লুৎফুর রহমান, জ্যেষ্ঠতম অধ্যাপক, কৌলিতত্ত্ব ও উদ্ভিদ প্রজনন বিভাগ, বিএইউ, ময়মনসিংহকে আহ্বায়ক করে ৫ (পাঁচ) সদস্য বিশিষ্ট একটি উপকমিটি গঠন করা হয়েছিল। এ প্রেক্ষিতে গঠিত উপ কমিটির একটি সুপারিশমালা অদ্যকার সভায় উপস্থাপন করা হলে সদস্য পরিচালক (শস্য) বলেন যে, হাইব্রিড ধানের অনুরূপ বিদেশ থেকে আলু আমদানীপূর্বক নিবন্ধিকরণের সুপারিশ না করণের ক্ষেত্রে গঠিত উপ-কমিটি আলু একটি সংবেদনশীল ফসল বিবেচনার কথা উল্লেখ করেছেন। তার মতে শুধু সংবেদনশীল ফসল হিসেবে বিবেচনায় এনে আলু আমদানীপূর্বক নিবন্ধনের সুপারিশ করা যুক্তি সংগত নহে। তিনি আরো বলেন মূল্যায়নের জন্য কোন কে ছাড় দেওয়া ঠিক হবে না। সভাপতি মহোদয় বলেন যে, কমিটি কর্তৃক যে তিনটি সুপারিশ প্রদান করা হয়েছে উহা বিষয়টিতে সিদ্ধান্ত গ্রহণের জন্য যথেষ্ট নহে। যে ভাবে সুপারিশমালা প্রণয়ন করার কথা সেভাবে তা আসে নাই। উক্ত বিষয়টির উপর কমিটির আরো সভা আহ্বান করে সুনির্দিষ্ট ভাবে সুপারিশমালা প্রণয়ন করা প্রয়োজন বলে তিনি মনে করেন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো।

সিদ্ধান্ত : গঠিত উপ-কমিটি আগামী ১ মাসের মধ্যে উক্ত বিষয়টির উপর সুস্পষ্ট সুপারিশমালা প্রণয়ন পূর্বক পরবর্তী সভায় উপস্থাপন করবে (দায়িত্ব : গঠিত উপ-কমিটি)

(খ) কারিগরি কমিটির ৪৯তম (বিশেষ) সভায় টিসিআরসি এক সপ্তাহের মধ্যে বিএডিসি, এসসিএ এবং প্রাইভেট সেক্টরের প্রতিনিধি নিয়ে আলু বীজ আমদানীর পরিমাণ নির্ধারণের একটি সুপারিশমালা প্রণয়ন করবে (দায়িত্ব : টিসিআরসি ও এসসিএ)। উক্ত সিদ্ধান্ত মোতাবেক টিসিআরসি, বিএডিসি, এসসিএ এবং প্রাইভেট সেক্টরের প্রতিনিধি নিয়ে পরীক্ষা-নিরীক্ষার নিমিত্তে বিদেশ থেকে বীজ আলু আমদানীর পরিমাণ নির্ধারণের একটি সুপারিশমালা অদ্যকার সভায় উপস্থাপন করা হলে জনাব মাসুম, সুপ্রিম সীড কোম্পানী বলেন যে, মূল্যায়নসহ

বিভিন্ন গবেষণা কাজে ব্যবহারের জন্য ৫০০ কেজির পরিবের্তে আরো-বেশী পরিমাণের বীজ আলু আমদানীর পক্ষে অভিমত ব্যক্ত করেন। এ প্রসংগে ডঃ আবদুর রাজ্জাক বলেন যে, প্রাথমিক পর্যায়ে ট্রায়ালের জন্য ৫০০ কেজি আলুই যথেষ্ট। সভাপতি মহোদয় পরীক্ষা নিরীক্ষার নিমিত্তে আলু আমদানীর বিষয়ে গঠিত উপ কমিটির সুপারিশমালাই যুক্তিযুক্ত বলে অভিমত ব্যক্ত করেন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো।

সিদ্ধান্ত : গঠিত উপ-কমিটির সুপারিশ মোতাবেক পূর্ব নির্ধারিত ২০০ কেজির পরিবের্তে টিসিআরসির ৫টি স্টেশনে প্রতিটিতে ৫০ কেজি হিসাবে ২৫০ কেজি, দেবীগঞ্জ খামারে বীজ পরিবর্ধনের জন্য ২২৫ কেজি এবং এসসিএ কর্তৃক ডিইউএস ও স্প্রাউট টেস্ট সম্পন্ন করার নিমিত্তে ২৫ কেজিসহ সর্বমোট ৫০০ কেজি বীজ আলু আমদানীর অনুমতি প্রদানের জন্য জাতীয় বীজ বোর্ডে সুপারিশ করা হলো।

(গ) হাইব্রিড ধান-৯৯-৫ (হীরা) জাতটিকে ঢাকা অঞ্চলে বিপণন ও আবাদের অনুমোদন।

জনাব মোঃ মাসুম, চেয়ারম্যান সুপ্রীম সীড কোম্পানী, কারিগরি কমিটির ৪৮তম ও ৪৯তম বিশেষ সভায় বিষয়টি ঢাকা অঞ্চলেও জাতটির চাষাবাদের অনুমতির আবেদন জানান। এ প্রেক্ষিতে কারিগরি কমিটির ৪৯তম বিশেষ সভায় জাতটি ঢাকা অঞ্চলের বিগত মৌসুমের চাষী পর্যায়ে উৎপাদন ফলাফল উপস্থাপন করবে এই মর্মে সিদ্ধান্ত গৃহীত হয়েছিল। সে মোতাবেক বিগত ২০০৩-২০০৪ মৌসুমের ডিএই কর্তৃক প্রদত্ত তারতম্যের হাইব্রিড ধান-৯৯-৫ (হীরা) জাতটির চেক জাত বিধান-২৮ থেকে ফলনের তারতম্যের হার উপস্থাপন করা হলে সদস্য পরিচালক (শস্য) বলেন যে, ঢাকা অঞ্চলের প্রদত্ত ফলাফল সন্তোষজনক বাধিয়া জাতটিকে ঢাকা অঞ্চলেও নিবন্ধন করা যেতে পারে। এ প্রেক্ষিতে মহা ব্যবস্থাপক (বীজ), বিএডিসিও একমত পোষণ করেন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো।

সিদ্ধান্ত : সুপ্রীম সীড কোম্পানীর হাইব্রিড ধান-৯৯-৫ (হীরা) জাতটিকে ঢাকা অঞ্চলে চাষাবাদের নিমিত্তে নিবন্ধনের জন্য জাতীয় বীজ বোর্ডে সুপারিশ করা হলো।

(ঘ) ভারতীয় তোষা পাট জেআরও-৫২৪ (নবীন) জাত বাংলাদেশে মূল্যায়ন ও ছাড়করণ।

কারিগরি কমিটির ৪৯তম বিশেষ সভায় বিষয়টি উত্থাপিত হলে এই মর্মে সিদ্ধান্ত গৃহীত হয় যে, ভারতীয় পাট বীজ জেআরও-৫২৪ (নবীন) জাতটির মূল্যায়ন ও ছাড়করণ বিষয়ে প্রয়োজনীয় তথ্যাদি বাংলাদেশ পাট গবেষণা ইনস্টিটিউট কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ডের পরবর্তী সভায় উপস্থাপন করবে। এ প্রেক্ষিতে বিজেআরআই ঢাকা থেকে প্রতিবেদন পাওয়া গিয়েছে। উল্লেখ্য যে, জাতীয় বীজ বোর্ডের ৫৬তম সভায় বীজ উইং, কৃষি মন্ত্রণালয় কর্তৃক বিষয়টি উত্থাপিত হলে স্থানীয় নিয়ম নীতির আলোকে বাংলাদেশে ছাড়করণ বিষয়ে কারিগরি কমিটির মাধ্যমে সুপারিশ প্রদানের জন্য অনুরোধ করা হয়েছে। এ প্রেক্ষিতে সদস্য পরিচালক (শস্য) জাতটি এ দেশে ছাড়করণ করা হলে প্রজনন বীজ কোথা থেকে সরবরাহ করা হবে তার উৎস জানতে চান। জনাব ডঃ সামসুদ্দিন হামিদ, বিভাগীয় প্রধান, প্রজনন বিভাগ, বিজেআরআই বলেন যে, জাতটি যেহেতু ভারতীয় কাজেই প্রজনন বীজের উৎস ভারতেই হওয়ার কথা। তিনি আরো বলেন বিজেআরআই কর্তৃক উদ্ভাবিত ওএম-১, ও ও-৭২ এবং ও-৯৮৯৭ জাত তিনটি ফলন ও আঁশের মান জেআরও-৫২৪ (নবীন) থেকে অপেক্ষাকৃত ভাল তবে চাষীরা জাতটির বীজ সময়মত সরবরাহ পায় বলেই তারা এ জাতটি চাষাবাদ করে থাকে। এ প্রেক্ষিতে মহা-ব্যবস্থাপক (বীজ), বিএডিসি বলেন যে, বাংলাদেশে এমন অনেক মিল আছে যেখানে ভারতীয় পাট ক্রয়ে অনিহা প্রকাশ করে থাকে। জনাব মাসুম, সুপ্রীম সীড কোম্পানী বলেন যে, বিএডিসি কর্তৃক উৎপাদিত তোষা পাটের বীজ চাষীরা সময়মত সরবরাহ পান না এ ছাড়া জেআরও-৫২৪ জাতটির ভারতে বীজ উৎপাদন খরচ অনেক কম। উক্ত জাতের উৎপাদিত পাট বিক্রিতে চাষীদের কোন অসুবিধা হয় না। জাতটির জীবনকালও কম বলে তিনি উল্লেখ করেন। এ প্রেক্ষিতে সভাপতি মহোদয় বলেন উক্ত জাতটির আঁশের মান ও জীবন কাল যাচাইয়ের জন্য আরো গবেষণা দরকার। জাতটির প্রজনন বীজ কিভাবে সংগ্রহ করা যাবে এ বিষয়েও জাতীয় পর্যায়ে সিদ্ধান্তের প্রয়োজন। বিস্তারিত আলোচনা শেষে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো।

সিদ্ধান্ত : ভারতীয় তোষা পাট জেআরও-৫২৪ (নবীন) দেশে ছাড়করণের নিমিত্তে জাতটির গুণাগুণ আরও যাচাই-বাচাই এবং প্রজনন বীজ সংগ্রহের উৎসসহ একটি সুনির্দিষ্ট পূর্ণাঙ্গ তথ্য আগামী সভায় উপস্থাপন করবে (দায়িত্ব : বিজেআরআই, বীজ উইং ও এসসিএ)।

(ঙ) নননোটফাইড ফসলের বীজ মান ও মাঠমান (Seed Standard & Field Standard) নির্ধারণ প্রসংগে নননোটফাইড ফসলের ক্ষেত্রে নোটফাইড ফসলের অনুরূপ বীজের মান (Seed Standard) নির্ধারিত না থাকায় জাতীয় ও আঞ্চলিক বীজ পরীক্ষাগারে নননোটফাইড ফসলের মার্কেট মনিটরিং বীজ নমুনার পরীক্ষার ফলাফল প্রদানে জটিলতার সৃষ্টি হচ্ছে। উল্লেখ্য যে, বীজ আইন ও বীজ বিধির আলোকে মার্কেট মনিটরিং পরীক্ষার মাধ্যমে সকল ফসলের বীজের মান নিয়ন্ত্রণ করার দায়িত্ব বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সীর উপর অর্পিত। এমতাবস্থায় জাতীয়ভাবে নননোটফাইড ফসলের বীজমান ও মাঠমান নির্ধারণ করা অত্যাাবশ্যিক। বিষয়টি উপস্থাপন করা হলে, সদস্য পরিচালক (শস্য) বলেন যে, নোটফাইড ফসলের অনুরূপ নননোটফাইড ফসলের ক্ষেত্রে বীজ মান ও মাঠমান (Seed Standard & Field Standard) নির্ধারিত থাকা আবশ্যিক। এ প্রেক্ষিতে পরিচালক (গবেষণা), বারি ও মহা ব্যবস্থাপক (বীজ) একমত পোষণ করেন।

সভাপতি মহোদয় নননোটফাইড ফসলের বীজমান ও মাঠমান নির্ধারণের নিমিত্তে একটি উপ-কমিটি গঠনের পক্ষে মতামত ব্যক্ত করেন। আলোচনাক্রমে নিম্নবর্ণিত সিদ্ধান্ত গৃহীত হলো।

নোটফাইড ফসলের অনুরূপ নননোটফাইড ফসলের ক্ষেত্রেও বীজমান ও মাঠমান নির্ধারণের জন্য নিম্নবর্ণিত কর্মকর্তাগণের সমন্বয়ে একটি উপ-কমিটি গঠন করা হলো। :

১। ডঃ মতিউর রহমান, পরিচালক (গবেষণা), বাংলাদেশ কৃষি গবেষণা ইনস্টিটিউট, গাজীপুর	আহ্বায়ক
২। ডঃ মোঃ আঃ খালেক মিয়া, প্রফেসর, বঙ্গবন্ধু শেখ মুজিবুর রহমান কৃষি বিশ্ববিদ্যালয়, গাজীপুর	সদস্য
৩। প্রতিনিধি, বীজ পরীক্ষাগার, বিএডিসি,	সদস্য
৪। প্রতিনিধি, বাংলাদেশ কৃষি গবেষণা ইনস্টিটিউট, গাজীপুর	সদস্য
৫। প্রতিনিধি, বিনা, ময়মনসিংহ	সদস্য
৬। প্রতিনিধি, বাংলাদেশ সীড প্রোয়ার্স এন্ড ডিলার এসোসিয়েশন	সদস্য
৭। প্রতিনিধি ব্র্যাক	সদস্য
৮। আবদুর রহিম হাওলাদার, উপ-পরিচালক (ভেরাইটি টেস্টিং), বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সী, গাজীপুর	সদস্য-সচিব

উক্ত কমিটি পার্শ্ববর্তী (ভারত, পাকিস্তান, নেপাল ও শ্রীলংকা) দেশের সাথে সামঞ্জস্য রেখে নননোটফাইড ফসলের গ্রহণযোগ্য বীজমান ও মাঠমান প্রণয়নপূর্বক একটি সুপারিশমালা তৈরী করবে।

(চ) কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ডের ৪৭তম সভার সিদ্ধান্ত মোতাবেক বিএআরসির আর্থিক সহায়তায় ও বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সীর যৌথ উদ্যোগে জাতীয় পর্যায়ে একটি বীজ প্রযুক্তি সেমিনার অনুষ্ঠিত হওয়ার সিদ্ধান্ত রয়েছে। উক্ত সেমিনার সুষ্ঠু বাস্তবায়নের নিমিত্তে একটি সাংগঠনিক কমিটির রূপরেখা প্রণয়ন করা আবশ্যিক। এ প্রেক্ষিতে সভাপতি মহোদয় বলেন যে, জাতীয় বীজ প্রযুক্তি সেমিনার বিএআরসির আর্থিক সহায়তায় বিএআরসি ও এসসিএ এর যৌথ উদ্যোগে অনুষ্ঠিত হওয়ার পূর্ব সিদ্ধান্ত রয়েছে। এ ক্ষেত্রে বিএআরসি ও এসসিএ এর প্রতিনিধি একত্রিত হয়ে সুষ্ঠু বাস্তবায়নের প্রয়োজনীয় পদক্ষেপ নিবে। এ বিষয়ে অদ্যকার সভায় বিস্তারিত আলোচনার কোন প্রয়োজন নেই বলে তিনি জানান।

সভায় আর কোন আলোচনা না থাকায় সভাপতি উপস্থিত সকলকে ধন্যবাদ জানিয়ে সভার সমাপ্তি ঘোষণা করেন।

স্বাক্ষর/-
(মোঃ হামিদুর রহমান)
সদস্য সচিব
কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ড
ও
পরিচালক
বীজ প্রত্যয়ন এজেন্সী
গাজীপুর-১৭০১।

স্বাক্ষর/-
(ডঃ এম নূরুল আলম)
চেয়ারম্যান
কারিগরি কমিটি, জাতীয় বীজ বোর্ড
ও
নির্বাহী চেয়ারম্যান
বিএআরসি
ফার্মগেট, ঢাকা- ১২১৫।